CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिखनख

गीर्वाणवाणीषु विशेषबुद्धिस्तथापि भाषारसलोलुपोऽहम् ।
यथा सुराणाममृतेषु सत्सु स्वर्गाङ्गनानामधरासवे रुचिः ॥

अथ केश-वर्णन--(कवित्त)

जोबन-सरोवर के कोमल सिवारमूल मखतूल कामतंतु-तूल के से तार हैं ।
पंचसर-सिंधुर के स्याम चौंर किधौं भौंर किधौं सिर सहज सिंगाररस-सार हैं ।
माथे मार-मरकतमनि के मयूख किधौं किधौं घेरे चंद कों तिमिर-परिवार हैं ।
लामे लामे जामे जोतिलता के बितान किधौं किधौं स्यामबरन छबीले छूटे बार हैं ॥१॥

अथ माँग-वर्णन

किधौं तरुनी की तरुनाई ही के तोलिबो कौं अति ही अनूपरूप तुला की सी डाँडी है ।
सरिता सुधा की मुखसुधाकर-मंडल तें ऊरध कों उठी मिली धाराधर चाँडी है ।
ऊवत अकेली पाइ कचतमतोम किधौं दिनकरकिरनि नवीन बाँधि छाँडी है ।
सीस पर सखी की सँवारी माँग सोभियत किधौं दुहूँ पाटिन की मेड़रेख माँडी है ॥२

अथ पाटी-वर्णन

चंद के उपर-भाग किधौं उठी घनघटा किधौं स्यामघन-मन घेरिबे की घाटी है ।
लीलामृग-नैन तिनपर बाँधी सोधि मैन मरकतमनि के मयूखनि की टाटी है ।
तकिया सों ठिकि बैठी पीठि की चपेट परें किधौं बेनी पन्नग की फन परिपाटी है ।
ओंछिओंछि करतल पोंछिपोंछि घोटिघोटि पाटी किधौं कामबिद्या पढ़िबे की पाटीहै३

अथ वेणी-वर्णन

सीस तें सरस ह्वै कै पीठ की पनारी छ्वै किधौं धँसी धार रस सिंगार रसाल की ।
निसापति-अंक तें किधौं निसा रिसाइ चली छाँह कै छबीली मुखनलिन के नाल की ।

---

(१) तंतु-तन (सुधा०) । मखतूल--फूलसूल (बाल०) । मार--मनि (वही) । मनि के--मन के (वही) । घेरे--घेरे (सुधा०) । किधौं स्याम०--लीले लेत मन कों (बाल०)। (२) सरिता--तारिनि (अभय०) । (३) तिन--जिन (बाल०) । ठिकि--तकि (वही)। चपेट०--बघेट पर (वही) । पन्नग--फनिग (वही) । परि०- पर फाटी (वही) । घोटि--घोटी पारी (वही) ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तम की तरंगिनी कि चढ़ी तरुनी के तन किधौं अवलंबी बेलि अतनु-तमाल की।
काम के बिलासनि की बिजैमाला किधौं किधौं नागरूप काछे आछी बेनी सोहै बाल की ४

अथ भाल-वर्णन

बार अंधकार सम सीसफूल तारागन पाटी-नभ नीचे अर्धचंद को सो घाटु है।
बंदन को बिंदु अरुनोदय को प्राचीभागु तिलक तखतभाग को सुहाग-पाटु है।
रूप के रतन जड़्यो हाटक के पाट पर घूँघट में प्रगट अखिल अंगराटु है।
केलि के समय प्रिय प्रतिबिंब को बैठकु 'केसोदास' भामिनी को सोभित ललाटु है ॥५।

अथ भृकुटी-वर्णन

किधौं नैन-दीपकनि ऊपर काजर-लीक किधौं महराब मुखसुधाकर-धाम की।
किधौं जुग कुंभरेख लिखी है आँखिन पर किधौं दलदुति नासाबंस अभिराम की।
किधौं पाटी भौंरन की झाई झिलमिलै स्याम किधौं भयभूमि बंक भाइनि सुभाम की।
रोष ही चढ़िति उतरति नेक ही के भाइ भामिनी की भृकुटी किधौं कमान काम की ॥६

अथ नेत्र-वर्णन

बंधु-बिधु-कोरा में चकोर को सो जोरा बैठ्यो किधौं मैन मृगबाल हित कै बढ़ाए हैं।
किधौं मीनकेत के जुगल मीन जंग जुरे किधौं खंजरीट एक पिंजर पढ़ाए हैं।
मिलत जिवाइबे कौं बिछुरत मारिबे कौं बान कै पियूष बिष बोरिकै कढ़ाए हैं।
किधौं बिधु पूरन मयंकमुख पूजा करी अलिन सहित किधौं नलिन चढ़ाए हैं ॥७

अथ तारे-वर्णन

पलक-संपुट मधि सालिग्राम-सिला एक कमलदलनि पर भौंरनि के बारे हैं।
किधौं मरकतमनि मुकतनि पर खँचे किधौं रतिनायक के सायक बिसारे हैं।
मृगमद-बिंद के लसत प्रतिबिंब किधौं दीपक-दगनि पर काजर के पारे हैं।
पियमन तारिबे कौं अवतारे कारे भारे बरुनी-किवारि माँझ तरुनी के तारे हैं ॥८॥

---

[४] छ्वैकै—पूरि (बाल०)। चढ़ी—घटी (वही)। आछी०—पाछै आली बेनी बाल की (अभय०)। [५] भागु—भामु (बाल०)। जड़्यो—जटे (अभय)। पिय०—प्रतिबिंब को मुकुर अति (बाल०)। 'केसोदास' ०—सुंदर सुहागिन को लसत (अभय०)। [६] दीपकनि०—दीप काली काजर की लीक किधौं (बाल०)। जुग—गज (अभय०)। भौंरन—डोरन (बाल ०); औरनि (अभय०)। भय०—भूमि बंक भाइ सुंदरी (बाल०)। [७] मैन०—मैन साथ मृगबाल द्वै (अभय० (; मृग मीनबाल हित कै (सुधा०)। मीनकेत—कामराज (वही)। किधौं खंजरीट०— खंजरीट राखि मानौ पींजर (वही)। बान०—बानिक। (बाल०, सुधा०)। बोरि—घोरि (बाल०)। कढ़ाए—गढ़ाए (वही)। सहित—समेत (अभय०)। किधौं—नैन (अभय०); मानौ (सुधा०)। [८] पलक०—फटिक के संपुट में (सुधा०)। मधि—झाँई (अभय०)। सम—सोई (सुधा०)। भौंरनि०—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ श्रवण-वर्णन

किधौं उर आइबे कौं पिय के सुभग मग किधौं साखीभूत दूत गुनगीत नाम के।
साजन की कीरति के सहज भाजन किधौं ताटंक झाँपे केलिकिसुक कै काम के।
किधौं केलिकलह निमित्त बिवि पीढ़े मित्त सुखदै सुनैया चित्तचरित ललाम के।
किधौं रसबातिन कौं रसायन राखे भरि सोने की सुकति किधौं श्रवन सुबाम के ॥९

अथ नासा-वर्णन

लोचन-सरोजनि के नालटूक एक बेह बिरचे उभय बेह सों सँवारि सूल की।
भौंह के जराय जरी नावक सी नीकी लागै मार-राजकुमार के तूनीर के तूल की।
बाम के दछिन बाम अंगन की मधिबेला मुख को मंडल मीन लाजबेली मूल की।
नासिका सुबास की प्रकासिका प्रकासमान डारौं वारि तापर तिरष तिलफूल की ॥१०

अथ कपोल-वर्णन

ढारि के सुढारि लीने मेदुर बँधूकफूल किधौं अति नवरस माधुरी के बाढ़े हैं।
किधौं दरदले मुख कनककमल-दल कुकुमरंजित लाल गोरताई गाढ़े हैं।
किधौं दोऊ कंदर्प के दर्पनमंडल माँजे देखियत तिन माँझ प्रतिबिंब ठाढ़े हैं।
किधौं कमनीय गोल कामिनी-कपोलतल किधौं कलधौत के तबक ताइ काढ़े हैं ॥११

अथ अधर-वर्णन

प्रीति की अमरबेलि ताके किसलय कितौं किधौं हेत पुरवत सुरनि के साके हैं।
दाभ ही के बीरे हैं कि बिद्रुम उकीरे हैं कि किधौं बरबंधु बर बंधुकप्रभा के हैं।
लाल लाल ओप सब अंगनि ऊपर लसै दंत दार्‌या-बीजन के रूप जिहिं ढाके हैं।
सौति के सुरत सुखभूतनि भुलाइबे कौं अधर अरुन किधौं बिंब रसपाके हैं ॥१२॥

अथ दंत-वर्णन

विद्रुम के संपुट में किधौं मोतीलर किधौं कंजकोस बीच बीज दारयौं से लसत हैं।
बीजुरी सी दमकति किधौं चूनी चमकति जोति के जराउ मधि हीरा से हसत हैं।

मौंर से निहारे (अभय०, सुधा०)। सुकतिन०--मुक्ति सुकतिन पर (अभय०) । मुकुत सुकुत पर (सुधा०)। के--ने (वही)। दीपक--दीपत (वही)। पारे-बारे (वही)। कारे--तारे--(वही) किंबारि--कीबरी (अभय०)। माँझ--मानो (सुधा०)। [९] दूत--पूत (अभय०)। के०--सहज सुभाजन (बाल०)। चरित--तरुन (वही)। किधौं रस०--रहस-बातनि के (अभय०) । [११] बँधूक--मधूक (अभय०)। अति०--अमित सुरस (बाल०)। कंदर्प--मदन (वही)। तल--लोल (वही) । [१२] किधौं हेत--दयित के (अभय०)। बीरे--चीरे (बाल०)। हैं कि--किधौं (बाल०)। ओप--आप (बाल०)। भूतनि०-भूलत चाखत रस (अभय०)। अरुन-सधर (वही)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भोर-कुंदकोरक कि तारिका-किसोरक कि तारापति बिंब में बिलास बिलसत हैं।
सुदती के दंत किधौं किधौं बर मेरे जान बत्तिस बदन माँझ अक्षत बसत हैं ॥१३॥

अथ चिबुक-वर्णन

किधौं यह प्रभा के प्रबाह की भाँवरी परी उपमा सुरंग किधौं नारँग अनूप की।
कंदर्प के दर्पन अमोल की कि मूल गाँठि किधौं सीवाँ सोभित मनोज-जयजूप की।
अध अरु ऊरध की सोभा की अवधि किधौं बिधि बानीमुख मधि बेदी सोहै रूप की।
किधौं चंदबदनी को चिबुक बिराजमान किधौं चारु चावरी बदन-चंदभूप की ॥१४॥

अथ मुख-वर्णन

जीत्यो न जुवति-मुख मंद न सूरजतेज अमरसमूह याको करत न पानु है।
चारहू दिसा तें उए राहु न रोकत राह कलँकरहित सुद्ध सुख को निधानु है।
छ-दस कला को कुहू कौमुदीबिलास लसै पून्यौ सो पूरन निसि दिवस समानु है।
चारु चंदबदनी को बदन बिचारु किधौं बैठ्यो हेमखंभ पर हिमकरु आनु है ॥१५॥

अथ ग्रीवा-वर्णन

पंचबान किंनर को किधौं बर बीनदंड सुललित सातौ सुर ताको अंतरालु है।
किधौं पियभुजबेलि-अवलंबु किधौं कंबु अंबुनिधि नातें याकों मिल्यो मुत्तिजालु है।
लाजत कपोत देखें राजत त्रिबलिरेखैं मारमल्ल खंतुखाँडु रंग को रसालु है।
कुंदन को भाथो सो कुँवरि राधिका को कंठ किधौं साँचे ढार्‌यो मुखपंकज को नालु है

अथ भुजमूल-वर्णन

कंचन के कलस कि जोबन-भवन तन किधौं एक सूल कूल हारावलि-गंग के।
मानगढ़ गुरजैं बिराजमान दोऊ किधौं चवगान-गाँस किधौं भूपति अनंग के।
सवै बर अंगनि के मंडलीक मेरे जान किधौं सेल-सामुहे सुरत-रसरंग के।
जोवन सुढार भार भामिनी के भुजमूल बाढ़े हैं कुसुमसर साहिब के संग के ॥१७॥

---

[१३] के संपुट०--दुबीच किधौं मोती की दुवर लर (अभय०)। कंज०--किधौं कंजकोस बीज (वही)। से--के (वही)। बीजुरी०--किधौं मन्यै (वही)। सुदती-सुंदरी (बाल०)। अक्षत--लछन (अभय०)। [१४] नारंग--इंगति (बाल०)। कंदर्प०--मदन के मुकुरक आगोल की कि मूल (वही)। सीवाँ- गाँठि (वही)। बिधि०--किधौं बिधि बानी मुख मधि बेदी बेदी रूप की (अभय०)। सुद्ध--सब (बाल०)। खंभ--बल्ली (अभय०)। [१६] ताको- याको (अभय०)। किधौं पिय०--अंबुनिधि नाते चंद्रमा सों मिल्यो आनि पाँति पाँति ग्रीवा मधि बन्यो मोतीमालु है (बाल०)। भाथो--थाँम (वही)। कुँवरि-कुँवरि कामकामिनी को (अभय०)। किधौं०--कंठ किधौं किधौं मुख (वही)। [१७] गाँस--गोइ (बाल०)। जोबन--सोबन (अभय०)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ भुज-वर्णन

इकसरे चंपे के चौसर किधौं एक खंभ बाँधे नवकामरस-उक से हैं नेम के।
किधौं बिपरीत नाल उए करकंजन तें किधौं आदिकोरक सुरत-बेलि खेम के।
केलि-अवसान उपधान होत सेज पर सहज बिराजत मृनाल किधौं हेम के।
चलत हलत पलपल पुलकत अलि किधौं पियकंठ के सुदृढ़ पास प्रेम के ॥१८॥

अथ अंगुली-वर्णन

अंगुल सदल दल बसन तल मिलित मयूख नखमनि को प्रकासु है।
लेखनी बिरंचि रची निकाई की लिखिबे कौं देखियै सुरेखा सी सोभा को सुबासु है।
मानिनी-आनन पर किरन-मयंक ढरि नीचेई रहत जंघ-कदली के पासु है।
किधौं कर जमल कि काम के कमल दोऊ किधौं ये सहज कामदेव के खवासु है ॥१९॥

अथ कुच-वर्णन

किधौं मत्त-मनोभव-इभ-कुंभ देखियत अंचल ते ऊपजे सुभाब ही के ढाल के।
किधौं चक्रवाक जुग किधौं एकताल गिरि किधौं पकबेलफल किधौं फल ताल के।
द्वै स्वयंभु संभु किधौं रहे अंग अंग मिलि मंगल-कलस किधौं काम-नरपाल के।
रोमावली एकनाल कमलकोरक जुग किधौं उच्च ओरनि कठोर कुच बाल के ॥२०॥

अथ कुचाग्र-वर्णन

तरनि के प्रतिबिंब किधौं देखियत किधौं कमलकलीन पर भँवर सुसीले हैं।
पीय-परिरंभन के प्रथम मिलन किधौं हेमकलसनि पर खँचे मनि नीले हैं।
किधौं रतिपति स्याम उभै संभुसीस पर किधौं पति-पानिन के परस सलीले हैं।
किधौं काम जीति जग उलटि नगारे पूजे अतसी-पुहुप किधौं चूचक छबीले हैं ॥२१॥

अथ कुचांत-वर्णन

मोती-जोन्ह-जोति मिली एक होत मंडल सो भूषन-प्रभा सुभासि कंठ के निकट की।
बंकट अटक किधौं मन के निवास कौं कि बिरचि सँवारी रंगभूमि काम-नट की।

---

[१८] चंपे०--सों सुरस किधौं खंभ बाँधे (बाल०)। बाँधे०--नवरस कामरस (वही)। ऊक०--ऊक के (अभय०)। कोरक--कारन (वही)। बेल-खेल (वही)। सहज०--चलत हलत किधौं दोलादंड (वही)। चलत०--बेलि यों बलित सु ललित भुज भामिनी के (वही)। [१९] दल-अरु (बाल०)। लिखी-ताकि (वही)। [२०] अंचल--अचल (अभय०)। ऊजे०--उपजत सुभाउ ही ढाल (वही)। पक०-प्रीति-बेलि फली (बाल०)। फल-पल (अभय०)। अंग०--अैन अंग (बाल०)। ओरनि०--डोरनि कटोरे (वही)। [२१] भँवर०-भौंर सिसु लीले (बाल०)। सँचे--धरे (अभय०)। रतिपति--रतिपिय (वही)। पानिन०--पान के सुपरसन लीले (बाल०)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहै जानि कोमल सुकंचुकी लपेटिजति पंचबान लगे प्रियग्रीवा रहे लटकी। ऊँची नीची छाती कि उरोजन के आसपास सोने की सी सीमा कि सुमेरुगिरितट की

अथ रोमराजि-वर्णन

किधौं अलिमाल उड़ी नाभि नीके नीरज तें किधौं चित्ररेख एक रेख की सिंगार की गोरे थोरे तन किधौं बेनी की परति झाइँ किधौं सुललित सिरी मत्तगज-मार की। किधौं नीवी मरकतमनि की मयूख मिली कटि के सुहाइ कौं किधौं सलाका सार की। कुच चक्रवाकनि के नीचे रोमावली किधौं गिरि-पारि मानौ मंजु मंजरी सिवार की ॥२३

अथ उदर-वर्णन

पान ऐसो पेखियत जलजात देखियत बास ही अघान महँ साँस ही डगतु है। चंपे के कोमल दल एक ही सों दबि रहे काम की यों छीन तनु त्रिबली बगतु है। तिनु अनुधामु काम किधौं तपसिद्धि स्याम हेमकंजकूल सूल कहतु जगतु है। कबिबर बरनत उदर परमलघु है कि नाहीं मेरे जान भ्रमु सो लगतु है ॥२४॥

अथ नाभि-वर्णन

किधौं कूप किधौं रूपनदी माँझ भौंर उठ्यो कै अमी अनंग को गभीर नद भर्‌यो है। आदिबेदपाठक बिरंचि किधौं रचि पचि केलिकृत-काजैं ओड़ो कुंडु खोदि धर्‌यो है। किधौं भयभीत भवनैननि अदृष्ट ठौर मानि कामदेव आनि निम्नधाम कर्‌यो है। बहुत बिचारत हौं बरन्यो न जात तऊ बूड़ि गयो चित्त नाभिचक्र माँझ पर्‌यो है ॥२५।

अथ त्रिबली-वर्णन

किधौं नवजोबन-तरंगिनि-तरंग उठै समर सँवारे किधौं सोपान बिसेष है। किधौं करतार कर अंगुली की लीक लघु, उच्च कुच-गढ़ तर किधौं खाईं भेष है। किधौं कामरथ-नेमि, उदित उदर माँझ देखियत कोऊ अरु कोऊ कौं अदेख है। तरुनी तरुन तनु तुल्य कों न त्रिभुवन त्रिबली न होइ तीन्यौ निकाई की रेख है ॥२६

---

[२२] मोती०--पोति मोतिजोनि (अभय)। सुभासि--सभा कि (वही) बंकट०--टाँक टकटक (बाल०)। यहै०--यहै जिय जानिकै मिले (वही)। [२३] नीके--नव (अभय०)। सिंगार--मगार (वही)। मत्त०--मन गजराज (बाल०)। सलाका--सरागें (अभय०)। मंजु--मख (वही)। [२४] पान--पात (बाल०)। [२५] कूप०--बरकूप (बाल०)। उठ्यो--घोर (वही)। अभी--आनि (वही)। नैननि--नैनहू (अभय)। मानि०--मानौ कामदेव जू ने भुवि (बाल०)। बहुत०--भाँति भाँति बिचारत बरन्यो बरन्यो न जात (अभय०)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ श्रोणी-वर्णन

अंगनि में महागुरु जोबन-गरब-गाँठि कुच गिरि रहे किधौं हेतु मंद चाल की।
कामरथ चक्र की आकृति यामें पाइयत केलि कौं बैठकि पिय रसिक रसाल की।
बिपरीतिमंडित जघन-खंभ नीवँ किधौं लाह की गिरद गादी मैन महिपाल की।
अंमृत सों सानी किधौं सोने की सरस पींडि सोभियत सुंदर सुवर्न श्रोनी बाल की ॥२७

अथ चरण-नख-वर्णन

कंज के दलनि पर हिमकर-बिंदु किधौं किधौं अरबिंद इंदु कामतेज भाम के।
किधौं गति रानी के तखत लसैं बैठकैं ये किधौं दीपमाल सोभियत गतिधाम के।
किधौं रतिराज पंच पंच परिपंच जोरि सेवत सुभाइ यान कमला ललाम के।
किधौं कामसायक के जोति वंत मानियत फल किधौं मेरे जान सुनख सुबाम के २८

इति श्रीकेशवपंडितविरचितशिखनखवर्णनं समाप्तम्।

[२७) रहे०–हेतु कोऊ (अभय०)। चक्र०--चक्रिका अजीत (बाल०)। सुवर्न--सोवन (अभय०)। [२८] 'बाल०' में नहीं है। 'अभय' में इसके अनंतर सारी, समस्त भूषण और अंगवास वर्णन के वे ही छंद हैं जो 'कविप्रिया' के चौदहवे प्रभाव में क्रमशः ८५, ८६, ८४ हैं। इसके अनंतर उसी प्रभाव का ६३ छंद है। बाल०' के अंत में 'कविप्रिया' के उक्त प्रभाव का छन्द ६४ है।